CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शनि चालीसा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0.In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ शनैश्चराय नमः

ॐ ऐं ह्रीं स्रीं शनैश्चराय नमः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शनि चालीसा

(प्रतिदिन पाठ करने योग्य)

प्रकाशक : नाथ पुस्तक भण्डार, दिल्ली

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशक :

नाथ पुस्तक भण्डार
११४-दरीबा कलाँ, दिल्ली-११०००६
दूरभाष : २३२७५३४४

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण : सन् २००६

मूल्य : रु० १०.००

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ श्रीशनिश्चराय नमः ॥

श्री शनि-चालीसा (१)

❋ दोहा ❋

जय गणेश गिरजा सुवन, मङ्गल करण कृपाल ।
दीनन के दुःख दूर करि, कीजै नाथ निहाल ॥

जय-जय श्री शनिदेव प्रभु, सुनहु विनय महाराज ।
करहु कृपा हे रवि तनय, राखहु जन की लाज ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

❋ चौपाई ❋

जयति-जयति शनिदेव दयाला ।
करत सदा भक्तन प्रतिपाला ॥
चारि भुजा, तनु श्याम विराजै ।
माथे रतन मुकुट छबि छाजै ॥
परम विशाल मनोहर भाला ।
टेढ़ी दृष्टि भृकुटि विकराला ॥
कुण्डल श्रवण चमाचम चमकै ।
हिये माल मुक्तन मणि दमकै ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर में गदा त्रिशूल कुठारा ।
पल में करैं अरिहिं संहारा ॥
पिङ्गल कृष्णो, छाया नन्दन ।
यम, कोणस्थ, रौद्र, दुख भंजन ॥
सौरी, मन्द, शनी दश नामा ।
भानु पुत्र पूजहिं सब कामा ॥
जापर प्रभु प्रसन्न ह्वै जाहीं ।
रंकहि राव करैं क्षण माहीं ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर्वतहू तृण होइ निहारत ।
तृणहूँ को पर्वत करि डारत ॥
राज मिलत बन रामहिं दीन्ह्यो ।
कैकेइहुँ की मति हरि लीन्ह्यो ॥
वनहूँ में मृग कपट दिखाई ।
मात जानकी गई चुराई ॥
लखणहिं शक्ति विकल करि डारा ।
मचिगा दल में हाहाकारा ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रावण की गति-मति बौराई ।
रामचन्द्र सों बैर बढ़ाई ॥
दियो कीट करि कंचन लङ्का ।
बजि बजरङ्ग वीर का डङ्का ॥
नृप विक्रम पर तुहिं पगु धारा ।
चित्र मयूर निगलि गै हारा ॥
हार नौलखा लाग्यो चोरी ।
हाथ - पैर डरवायो तोरी ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारी दशा निकृष्ट दिखायो ।
तेलिहिं घर कोल्हू चलवायो ॥
विनय राग दीपक महँ कीन्ह्यों ।
तब प्रसन्न प्रभु ह्वै सुख दीन्ह्यों ॥
हरिश्चन्द्रहुँ नृप नारि बिकानी ।
आपहुँ भरें डोम घर पानी ॥
तैसे नल पर दशा सिरानी ।
भूँजी - मीन कूद गई पानी ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री शङ्करहिं गह्यो जब जाई ।
पारवती को सती कराई ॥
तनिक विलोकतही करि रीसा ।
नभ उड़ि गयो गौरि-सुत-सीसा ॥
पाण्डव पर भै दशा तुम्हारी ।
बचीं द्रौपदी होति उघारी ॥
कौरव के भी गति मति मार्‍यो ।
युद्ध महाभारत करि डार्‍यो ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रवि कह मुख महँ धरि ततकाला ।
लेकर कूदि परयो पाताला ॥
शेषदेव - लखि विनति लाई ।
रवि को मुख से दियो छुड़ाई ॥
नौ वाहन शनि के सुखधामा ।
गज गर्दभ अरु अश्व ललामा ॥
जम्बुक सिंह मेख अरु कागा ।
हंस मयूर सहित अनुरागा ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गज वाहन पर जब प्रभु राजैं ।
सर्व सिद्ध करि अरि सुख साजैं ॥
जब गर्दभ पर दुहुँ पग धारैं ।
जन कह मान भंग करि डारैं ॥
हय चढ़ि देयँ धान्य धन भारी ।
जम्बुक ते हो युद्ध करारी ॥
सिंहारूढ़ जबै प्रभु आवैं ।
सब प्रकार से नाश करावैं ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेढ़ा के वाहन जब आवहिं ।
अतिशय जन को रोग सतावहिं ॥
वाहन काग-काल-मुख डारै ।
हंस परम आनन्द पसारै ॥
मोर बैठि अतिशय सुख देवैं ।
करि पूजन जन शुभ फल लेवैं ॥
जो यह शनि चरित्र नित गावै ।
कबहुँ न दशा निकृष्ट सतावै ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अद्भुत नाथ दिखावैं लीला ।
करैं शत्रु के नसि-नसि ढीला ॥
जो पण्डित सुयोग्य बुलवावैं ।
विधिवत् शनि-ग्रह शान्ति करावैं ॥
पीपल-जलशनि-दिवस चढ़ावहिं ।
दीप दान दै बहु सुख पावहिं ॥
नमत राम सुन्दर ऋषि-दासा ।
शनि सुमिरत सुख करत प्रकासा ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

❋ दोहा ❋

प्रतिमा श्री शनिदेव की, लौह-धातु बनवाय ।
प्रेम सहित पूजन करै, सकल कष्ट कटि जाय ॥
चालीसा नित नेम यह, कहहिं सुनहिं धरि ध्यान ।
निश्चय शनि-ग्रह सुखद ह्वै नर पावहिं सम्मान ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री शनि चालीसा (२)

चौपाई

जय श्री शनि देव महाराजा ।
जय कृष्णा गौरी सिरताजा ॥
रवि सुत जय छाया के नन्दन ।
महाबली तुम असुर निकन्दन ॥
पिंगल मन्द रौद्र शनिनामा ।
करहु भक्त के पूरण कामा ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

श्याम वरण है अङ्ग तुम्हारा ।
वक्र दृष्टि तन क्रोध अपारा ॥
किरीट मुकुट कुण्डल छबि छाजै ।
गल मुक्तन की माल विराजै ॥
कर कुठार दुष्टन को मारण ।
चक्र त्रिशूल चतुर्भुज धारण ॥
गिरि राई के तुल्य करो तुम ।
तिनहीं के सिर क्षत्र धरो तुम ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जो जन तुम में ध्यान लगावें ।
मन वांछित फल आतुर पावें ॥
जापर कृपा आप की होई ।
जो फल चाहैं मिलिहैं सोई ॥
जिस पर कोप कठिन तुम ताना ।
उसका फिर नहिं लगत ठिकाना ॥
साँचे देव आप ही स्वामी ।
घट घट बासी अन्तर्यामी ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दशरथ नृप के ऊपर धाये ।
श्री रघुनायक विपिन पठाये ॥
निशिचर हाथ सिया हरवाई ।
लक्ष्मण उर में शक्ति समाई ॥
इतना त्रास राम को दीन्हा ।
नाश लंकपति कुल का कीन्हा ॥
चेतक तुमने सबहिं दिखाया ।
विक्रम भूप चोर बनवाया ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसने छोटा तुम्हें बताया ।
राज पाट सब धूल मिलाया ॥
हाथ पैर तुम दिया कटाई ।
पाट तेलिया की हँकवाई ॥
फिर सुमिरन तुमरा उन किया ।
दिये पैर कर खुश कर दिया ॥
युगल ब्याल उसके करवाये ।
शोर नगर में सारे छाये ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जो कोई तुमको बुरा बतावें ।
सो नर सुख सपनेहुँ नहि पावे ॥
दशा आप की सब पर आवे ।
फल शुभ अशुभ हाल दिखलावे ॥
तीनहुँ लोक तुम्हें सिर नावे ।
ब्रह्मा विष्णु महेश मनावे ॥
लीला अद्भुत नाथ तुम्हारी ।
निसिदिन ध्यान धरे नर नारी ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहँ तक तुम्हरी करूँ बड़ाई ।
लङ्क भस्म छिन माँहि कराई ॥
जिन सुमिरे तिन अस फल चाखा ।
कहँ तक तर्क बढ़ाऊँ शाखा ॥
दया होत ही करहु निहाला ।
टेढ़ी दृष्टि में कठिन कराला ॥
नौ बाहन हैं नाथ तुम्हारे ।
गर्दभ अश्व और गज प्यारे ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेष सिंह जम्बुक मग माना ।
काम मयूर हंस पहचाना ॥
गर्दभ चढ़ि जिस पर तुम आयो ।
मान भंग उसका करवायो ॥
चढ़ घोड़े तुम जिस पर आयो ।
उस नर को धन लाभ करायो ॥
हाथी के वाहन सुख भारी ।
सर्व सिद्धि नर को दे डारी ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जो मेढा के वाहन साजो ।
रोग मनुष्य के तन में छाजो ॥
जम्बुक बाहन चढ़े पधारो ।
ते नर से हो युद्ध करारो ॥
आओ सिंह चढ़े जेहि ऊपर ।
दुश्मन उनका रहे न भू पर ॥
जिसको काम सवारी घेरौ ।
उसको आग काल मुख गेरौ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मोर चढ़ों राशी जो चीन्हीं ।
धन सम्पति उसको बहु दीन्ही ॥
हंस सवारी जिस पर आवत ।
उस नर को आनन्द दिखावत ॥
जै जै जै शनि देव दयाला ।
कृपा दास पर करहु कृपाला ॥
यह दस बार पाठ जो करे ।
कटहिं कष्ट सुख निशिदिन रहे ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छीतरमल शनिजू का चेरा ।
नगर हाथरस करहिं वसेरा ॥

❋ दोहा ❋

जयति जयति रवि तनय प्रभु, हरहु सकल भ्रमशूल ।
जन की रक्षा कीजिये, सदा रहहु अनुकूल ॥

❋ सोरठा ❋

लीजै शरण मझार, दीजै अभिमत फल प्रभु ।
कीजै जै-जैकार, जयति-जयति जब शनि सुखद ॥

❋ इति श्री दुर्वासाश्रम, प्रयागवासी रामसुन्दर दास
विरचित श्री शनिदेव चालीसा सम्पूर्णम् ❋

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री शनिदेव जी की आरती

जय शनिदेव दीन दयाल ॥ जय शनिदेव० ॥

प्रेम युत तव करहुँ आरति,
साजि प्रेम सुथाल ।
सकल मम अपराध छमि,
प्रभु होहु सपदि दयाल ॥
वेद विदित अपार महिमा,
रूप परम विशाल ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करत पल महँ शत्रु मर्दन,
भक्तजन-प्रतिपाल ॥ जय०
अति प्रचण्ड प्रकोप तुम्हारो,
होत है जेहिं काल ।
लोप होत न देर लागत,
कोष से धन माल ॥
प्रेम करि जो तुमहिं विनवत,
रैन दिन प्रति काल ।
धरत तेहिं गृह चरण,
कञ्चन करत तुरत निहाल ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करि कपट छल जो भुलावत,
करत नेक न ख्याल ।
कष्ट बुधिबल होत ताकर,
हरत वस्तर घाल ॥
भक्तियुत जो तुमहिं अरचत,
भनत 'सुन्दर' लाल ।
सकल सुख-सम्पति तिनहिं,
घर देहिं भरि तत्काल ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मंत्र रामायण

गोस्वामी तुलसीदास रचित श्रीरामचरितमानस के दोहे चौपाईयाँ मंत्रों का कार्य करते हैं।

ऐसे ही कुछ मंत्रों का संग्रह मंत्र रामायण नामक इस पुस्तक में किया है। इन मंत्रों का सम्पुट लगाकर पाठ करने से निश्चय ही भिन्न-भिन्न मनोकामनाएँ पूरी होती हैं। इन्हें बहुतों ने आजमाया है। आप भी अपनी मनोकामना पूर्ण कीजिये।

प्रकाशक – हर प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता-

卐 नाथ पुस्तक भण्डार

११४-दरीबा कलां, दिल्ली-११०००६, दूरभाष: २३२७५३४४

श्रीहनुमान बाहुक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

सम्पूर्ण वर्ष की विस्तृत जानकारियों के लिये पढ़िये-

"हिन्दी पञ्चांग"

तिथि निर्णय

१२ ज्यतिर्लिंगों के दर्शन के साथ-साथ • मुख्यत: तारीख • तिथि का समय कब से कब तक • विक्रम-शाका सम्वत् • व्रत-त्यौहार कब और कैसे • छुट्टियाँ • नक्षत्र-राशि प्रवेश • चन्द्रमा-सूर्य-मंगल आदि ग्रहों का उदय-अस्त • विवाह आदिमुहूर्त्त • पंचक • मूल • भद्रा • शुभ-अशुभ योग • सूर्य-चन्द्र ग्रहण की जानकारी • ग्रह पीड़ा निवारण मंत्र-यंत्र पूजा विधि • राशि ज्ञान-फल • राशि रत्न धारण विधि • दिन रात का चौघड़िया • दिशा शूल परिहार • दूध-अखबार हिसाब का कोष्टक • मौसम ८ तेजी-मंदी (मार्किट रुख) • विश्व घटना चक्र • देवी-देवताओं के बहुरंगी चित्र व उनके जपनीय मंत्र • किस देवी-देवता के मंत्र का जाप किस माला से करें • गीतासार • भगवानराधाकृष्ण कीलीलास्थली मथुरा-वृन्दावन के मंदिरों में मनाये जाने वाले विशेष पर्व-उत्सवों का विशेष वर्णन आदि उपयोगी सामग्री से सुसज्जित है ।

साइज २८ × ४४ से.मी. पृष्ठ संख्या ३६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदित्यहृदयस्तोत्रम्

सूर्य सभी ग्रहों का स्वामी है। इसलिये सूर्य आदि सभी ग्रहों की शांति अथवा ग्रहजनित दोष निवारण हेतु ऋषि मुनि सूर्य उपासना द्वारा **इच्छित लाभ प्राप्त किया करते थे।**

सूर्य अर्चन के आदित्यहृदय–भविष्यपुराणोक्त तथा बाल्मीकि कृत स्तोत्र एवं अनेक स्तोत्र, मंत्र-तंत्र-यंत्र तथा विभिन्न पुष्प अर्पण करना और सूर्य के शत वा सहस्रात्मक शास्त्रोक्त बहु विध उपाय प्रस्तुत पुस्तक में संग्रहित हैं जिनका प्रयोग कर **आप भी लाभान्वित हो सकते हैं।**

आदित्य (सूर्य) उपासना की संग्रहात्मक यह पुस्तक श्रद्धालुओं के लिये परम उपयोगी है।

पृष्ठ संख्या : २६४

डाक व्यय पृथक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

श्रीसूक्त

दरिद्रता और दीनताहीन जीवन से छूटने के लिये ऋषियों ने अनेक प्रकार के अनुष्ठान, जप-तप और दान आदि कर्मों का विधान कहा है।

ऋग्वेद के परिशिष्ट-श्रीसूक्त में धन प्राप्ति के लिये मंत्र हैं। वाराणसी के विद्वान् उमेश मिश्र (सुपुत्र श्री वेणीराम गौड़) ने इन मंत्रों का सरल हिन्दी में अनुवाद किया है। सम्पुटित श्रीसूक्त, ऋणहर्ता गणेशस्तोत्र, बिक्री वृद्धि के लिये मंत्र, कुबेर पूजन एवं श्रीयंत्र व उनकी पूजनविधि आदि भी पुस्तक में सम्मिलित कर दिये हैं जिनके नियमपूर्वक पूजा-पाठ करने से निश्चय ही लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

मूल्य: रु० ३०.०० डाक व्यय अलग

प्रत्येक पुस्तक के साथ पूजा के लिये रंगीन श्रीयंत्र मुफ्त संलग्न है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिन्दी पंचांग **तिथि निर्णय**™ (बहुरंगी) एवम् **पंडित पंचांग** (दो रंगों में छपा)

दोनों ही पंचांग अधिक उपयोगी सामग्री के साथ प्रस्तुत हैं।

* मुख्यत: तारीख * तिथि का समय कब से कब तक * विक्रम-शाका व राष्ट्रीय सम्वत् * अमुक व्रत, त्यौहार, कथा–कब और कैसे मनायें * छुट्टियाँ * नक्षत्र-राशि प्रवेश * प्रत्येक दिन की चन्द्र स्थिति * चन्द्रमा-सूर्य-मंगल आदि ग्रहों का उदय-अस्त * विवाह आदि मुहूर्त्त * पंचक * मूल * भद्रा * शुभ-अशुभ योग * सूर्य-चन्द्र ग्रहण, कुम्भ की जानकारी * ग्रह पीड़ा निवारण मंत्र-यंत्र-तंत्र उपाय * राशि ज्ञान-फल, शुभ वार, शुभ रंग, शुभ अंक सहित * राशि रत्न धारण विधि * दिन-रात का चौघड़िया * पन्द्रह के यंत्र से शुभ-अशुभ ज्ञान * लाभ-हानि चक्र * राहु (नेष्ट) काल-किस समय शुभ कार्य नहीं करना चाहिए * अभिजित काल-अमुक दिन शुभ मुहूर्त्त न होने पर भी शुभ कार्य कब करें * दिशाशूल दोष परिहार-यात्रा के दिन दिशाशूल होने पर भी यात्रा दिशाशूल दोष दूर कर कैसे करें * दूध-अखबार हिसाब का कोष्टक * मौसम * तेजी-मंदी/मार्किट रुख * विश्व घटना चक्र * देवी-देवताओं के बहुरंगी चित्र व उनके जपनीय मंत्र * गीतासार * भगवान राधा-कृष्ण की लीला स्थली मथुरा-वृन्दावन के मंदिरों में मनाये जाने वाले विशेष पर्व-उत्सवों का विशेष वर्णन आदि उपयोगी सामग्री से सुसज्जित हैं।

साइज २८ × ४४ से.मी. पृष्ठ संख्या-२६ मूल्य : रु. २५.००

: रु. १५.००

सन् १८९९ पूर्व स्थापित पुस्तक प्रकाशन परम्परा

प्रकाशक : पूजा-पाठ व धार्मिक पुस्तकों के प्रमुख विक्रेता

卐 नाथ पुस्तक भण्डार

१९४-दरीबा कलां, दिल्ली-११०००६ दूरभाष : २३ २७ ५३ ४४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh